

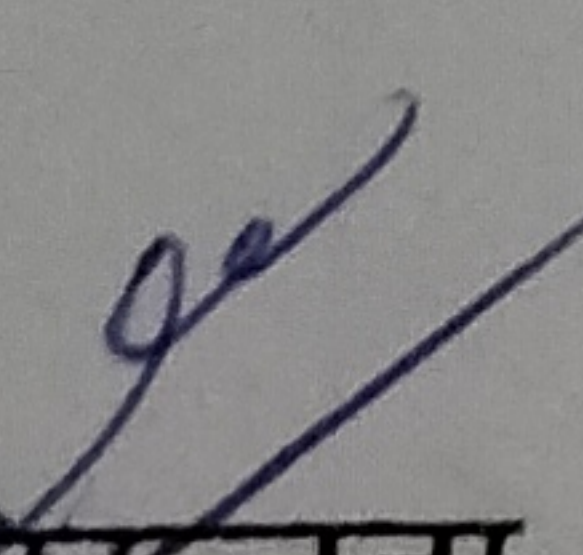
:: निर्णय ::

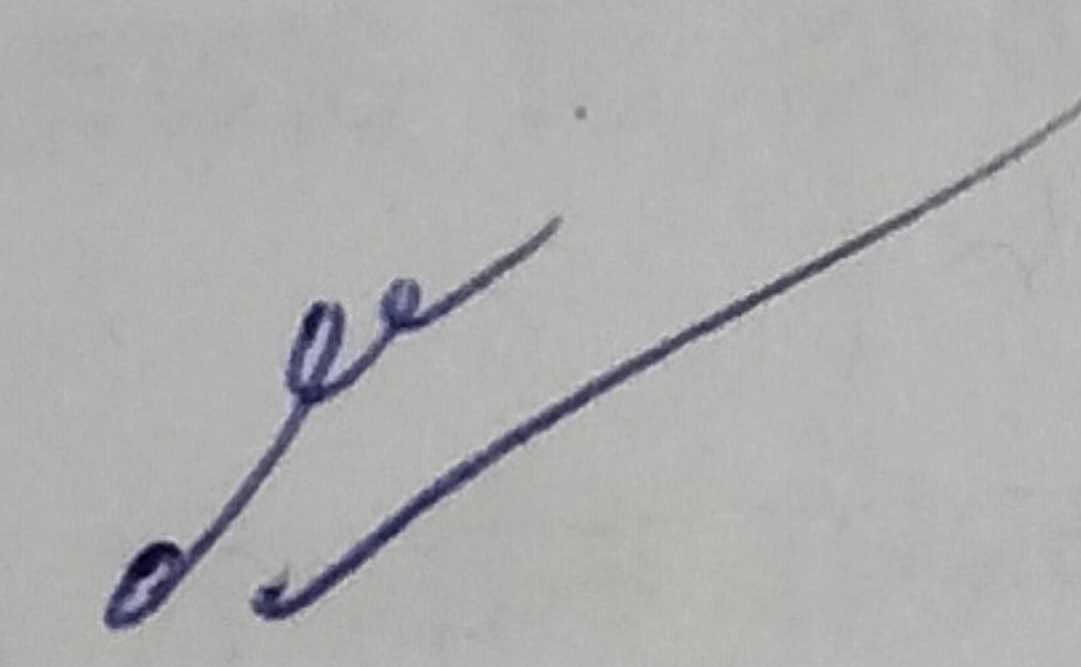
(आज दिनांक 19/07/2020 को घोषित)

- (1) अभियुक्त/गण का विचारण धृत अधिनियम की धारा 4 (क) के अपराध के लिये किया जा रहा है।
- (2) अभियुक्त/गण ने स्वेच्छया अपराध करना स्वीकार किया है। अभियुक्त द्वारा स्वेच्छापूर्वक की गई स्वीकारोक्ति पर अविश्वास किये जाने का कोई कारण नहीं है।
- (3) अभियुक्त/गण द्वारा स्वेच्छापूर्वक की गई स्वीकारोक्ति के आधार पर अभियुक्त/गण को धृत अधिनियम की धारा 4 (क) के अपराध में दोषसिद्ध पाते हुए सिद्धदोष ठहराया जाता है।
- (4) अस्तु अभियुक्त/गण को धृत अधिनियम की धारा 4 (क) के अपराध के लिये न्यायालय उठने तक की सजा एवं रुपये 1000/- अर्थदण्ड से दंडित किया जाता है। अर्थदण्ड की राशि जमा करने के व्यतिक्रम पर आरोपी/गण को पाँच दिवस का सादा कारावास पृथक से भुगताया जावे।
- (5) प्रकरण में जप्तशुदा सम्पत्ति नगद राशि यदि हो तो रुपये / - (..... रुपये) राजसात का राजकीय कोष में जमा किया जावे।
- (6) शेष सम्पत्ति मूल्यहीन होने से विधिवत् नष्ट किया जावे।

निर्णय खुले न्यायालय में हस्ताक्षरित,
दिनांकित कर घोषित किया गया।

मेरे बोलने पर टंकित
किया गया।


(चारुलता दांगी)
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी
सनावद (म0प्र0)


(चारुलता दांगी)
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी
सनावद, (म0प्र0)